Vol 6 Issue 2 August 2016 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | August - 2016

GRT Golden Research Thoughts

पर्यावरण संरक्षणः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओरः छिंदवाड़ा शहर के विशेष संदर्भ में)

धरवेश कठेरिया[1], टीकमणि[2] , निरंजन कुमार[3], नीरज कुमार सिंह[4], अम्बरीश सिंह[5] ,अविनाश त्रिपाठी[6] ,प्रणव मिश्र[7]

[1]सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[2]सहायक प्रोफेसर, शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छिंदवाड़ा, मधयप्रदेश।

[3]पीएच.डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[4]शोध सहायक (परियोजना– आईसीएसएसआर), जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[5]स्वतंत्र मीडिया कर्मी एवं शोधार्थी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।

[6]विद्यार्थी, एम.ए. जनसंचार, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

[7]स्वतंत्र मीडिया कर्मी एवं शोधार्थी, नागपुर, महाराष्ट्र।

सारांश–

स्वच्छ भारत अभियान को लोग महात्मा गांधी के स्वच्छता अभियान से जोड़कर देखते हैं। स्वच्छता अभियान कोई व्यक्तिगत अभियान नहीं बल्कि सामाजिक अभियान के साथ–साथ सामाजिक जिम्मेदारी भी है। शोध में प्राप्त 90 प्रतिशत मतदाताओं का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने का प्रयास है। छिंदवाड़ा जिले के 91.5 प्रतिशत मतदाता स्वच्छता अभियान से जुड़े हैं। आंकडों पर गौर करें तो स्वच्छता अभियान जिले में पूरी तरह से सफल दिखता है। आज स्वच्छता अभियान को लोग हांथों–हाथों ले रहे हैं तो इसका पूरा श्रेय महात्मा गांधी और वर्तमान समय में भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को जाता है। 84 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान लोगों को जागरुक करने में सफल रहा है। स्वच्छ भारत अभियान में जानी–मानी हस्तियों का नाम जुड़ने से आमलोगों का जुड़ाव अभियान में बढ़ रहा है। अभियान से जुड़े ज्यादातर उत्तरदाताओं का मानना है कि वे आसपास के वातावरण को साफ करने/रखने के उद्देश्य से इस अभियान से जुड़े हैं। अभियान का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है लेकिन इसमें निरंतरता की आवश्यकता है।

शब्द कुंजीः अभियान, छिंदवाड़ा, पर्यावरण, जागरूकता, समाज, पर्यावरण, स्वच्छ भारत।

उपकल्पनाः

- स्वच्छ भारत अभियान का जुड़ाव गांधीजी से है।
- स्वच्छता अभियान से भारत स्वच्छ हो रहा है।
- स्वच्छता अभियान के जरिए राजनीतिक हित साधने का प्रयास किया जा रहा है।
- स्वच्छ भारत अभियान से लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता आ रही है।
- स्वच्छता अभियान के कारण छिंदवाड़ा के लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता बढ़ी है।

उद्देश्यः

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए कुछ उद्देश्य तय किए गए हैं जो इस प्रकार हैं–

- स्वच्छ भारत अभियान में गांधी दृष्टिकोण का अध्ययन।
- स्वच्छता अभियान से लोगों में आई जागरुकता के मनोविज्ञान का अध्ययन।
- स्वच्छ भारत अभियान में वर्तमान सरकार की भूमिका का अध्ययन।
- स्वच्छ भारत अभियान से छिंदवाड़ा में स्वच्छता के प्रति आ रहे बदलाव का अध्ययन।

शोध प्रविधिः

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'पर्यावरण संरक्षणः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओरः छिंदवाड़ा के विशेष संदर्भ में)' में शोध को ध्यान में रखते हुए निम्न पद्धतियों/उपकरणों का उपयोग किया गया।

निदर्शन पद्धतिः शोध अध्ययन को स्वरूप देने के लिए उद्देश्यपरक निदर्शन के अंतर्गत छिंदवाड़ा जिले का चयन किया गया। छिंदवाड़ा जिले के शहरी क्षेत्रों में रह रहे निवासियों का चयन निदर्शन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरणः

प्रश्नावलीः अध्ययन को स्वरूप देने के लिए छिंदवाड़ा जिले के शहरी क्षेत्रों में रह रहे लोगों से प्रश्नावली के माध्यम से उनके राय और विचारों को जानने का प्रयास किया गया है। तथ्य संकलन के लिए खुली और बंद प्रश्नावाली का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में एक खुला प्रश्न रखा गया है जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है।

अनुसूचीः कुछ लोगों के शैक्षणिक आधार को देखते हुए प्रश्नावली भरने में हो रहे परेशानी के माध्यम से उनसे राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहां अनुसूची के रूप में भी किया गया है। जिससे कम पढ़े लिखें लोगों के राय–विचार को भी शोध में शामिल किया गया है।

प्रस्तावनाः

भारत को स्वच्छ और निर्मल बनाने के उद्देश्य से देश के वर्तमान माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने महात्मा गांधी के जन्मदिन के अवसर पर स्वच्छता अभियान को पूरे देश में एक साथ चलाया। स्वच्छता अभियान ने देश भर में एक क्रांति सरीखा काम किया लोग सफाई में जुटे, कुल मिलाकर प्रधानमंत्री जी की अपील काम कर गई और एक सफाई का माहौल तैयार हो गया। प्रधानमंत्री जी ने अन्य लोगों को प्रेरित करने के उद्देश्य से अपील की कि सभी लोग सफाई करते हुये अपनी फोटो सोशल साइट पर अपलोड करें। इस अपील ने सोशल साइटों पर इस तरह के वीडियो की बाढ़ ला दी। नेता, क्या अभिनेता सभी अपने प्यारे नेता की अपील के लिए अपनी सफाई करते वीडियो सोशल साइट पर शेयर करते नजर आए। जनता ने भी स्वच्छता अभियान में कंधे से कंधा मिला कर काम किया। हर तरफ सफाई नजर आने लगी, हर चौक–चौराहा, गली–मोहल्ला, साफ हो गया। अभियान पूरी तरह सफल होता नजर आया परन्तु आज की विडम्बना यह है कि यह अभियान कुछ ढीला सा हो गया है। शहर फिर अपने पुराने ढर्रे पर आ गए। अभियान के विज्ञापन कम हो गए और प्रधानमंत्री की व्यस्तता ने स्वच्छता अभियान सरीखे आंदोलन को ढीला कर दिया। लेकिन कहीं न कहीं थोड़ा ही सही पर लोग जागरुक हुए हैं। आजादी के 67 वर्ष पूरे हो गए हैं भारत विकासशील देश से विकसित देश की ओर तेजी से बढ़ रहा है और हर तरफ से आगे बढ़ रहा है। बाजारवाद में भारत ने खुद को स्थापित तो कर लिया है पर भारत आज भी एक चीज से निजात नहीं पा सका है जिसे गंदगी कहे, कचरा कहे या प्रदूषण, भारत के जिस हिस्से में देखें हमें गंदगी का अंबार दिखाई देता है।

भारत में हर चीज के लिए बडे–बड़े आंदोलन व धरने देखने को मिलते रहे है पर गंदगी को हमने छोटा समझा। इसके लिए छोटे–छोटे स्तर पर प्रदूषण के खिलाफ आवाज बुलंद हुई पर समग्र रूप से गंदगी को दूर करने का प्रयास नहीं हुआ। भारत की आजादी के प्रमुख सूत्रधार मोहनदास करमचंद गांधी जिन्हें आदर्श माना जाता है वो गंदगी के खिलाफ थे वे स्वयं सफाई अभियान करते थे उन्होंने जब देखा की लोग अभावों के साथ–साथ गंदगी के साथ भी जीवन यापन कर रहे हैं, तो उनके अन्तर्मन की चेतना में स्वच्छता के बीज पल्लवन हेतु उन्होंने स्वच्छता अभियान चलाया पर उनकी सोच भी संपूर्णता न पा सकी। भारत में गांधीजी ने गांव की स्वच्छता के संदर्भ में सार्वजनिक रूप से पहला भाषण 14 फरवरी 1916 में मिशनरी सम्मेलन के दौरान दिया था। उन्होंने वहां कहा था 'देशी भाषाओं के माध्यम से शिक्षा की सभी शाखाओं में जो निर्देश दिए गए हैं, मैं स्पष्ट कहूंगा कि उन्हें आश्चर्यजनक रूप से समूह कहा जा सकता है, गांव की स्वच्छता के सवाल को बहुत पहले हल कर लिया जाना चाहिए था।' (गांधी वाङ्मय, भाग–13, पृष्ठ 222)। उन्होंने भारत को अंग्रेजो से मुक्त तो करा दिया पर गंदगी से वो भी भारत को मुक्त नहीं करा पाए और न ही गंदगी को राष्ट्रव्यापी आंदोलन बना सकें।

75 साल पहले गांधीजी द्वारा मैला ढोने की प्रथा को खत्म करने की अपील के बावजूद आज भी यह कायम है। 1993 में बनाए गए कानून में किसी एक को भी सजा नहीं हुई और इसीलिए 2013 में हाथ से मैला ढोने की प्रथा को समाप्त करने के लिए नया कानून बनाया गया। राज्यों ने उस कानून को अभी लागू नहीं किया है। गुजरात सरकार ने तो हाथ से मैला ढोने वालों की मौजूदगी को ही नकार दिया है मिलेनियम डेवलपमेंट गोल (सहशताब्दी विकास लक्ष्यों) स्थायी विकास के लक्ष्यों में बदलने वाले हैं और भारत में अभी भी सुरक्षित स्वच्छता की स्थिति निराशाजनक है। एशिया पैसीफिक इंस्टीट्यूट के आंकड़ों के अनुसार भारत की जनसंख्या के बहुत बड़े प्रतिशत के पास सुरक्षित स्वच्छता की पहुंच नहीं हो पाई है। संस्थान के अनुसार 1970 में केवल 19 प्रतिशत घरों (85 प्रतिशत शहर और 57 प्रतिशत गांव) में साफ सफाई थी। 2008 में यह 30 प्रतिशत जनसंख्या तक पहुंच सकी जिसमें 52 प्रतिशत शहरों और 20 प्रतिशत ग्रामीण इलाकों में थे। शहरी मूलभूत सुविधाएं गांवों से पलायन करके शहरों में आए लोगों तक पहुंच नही पाती। 2012 मे हमारे देश करीब 62.6 करोड़ लोग जो कि जनसंख्या का लगभग 50 प्रतिशत है, वह खुले में शौच करते हैं। (यूनिसेफ और विश्व स्वास्थ्य संगठन)। स्वच्छता केवल शौचालयों तक ही सीमित नहीं है। भारत में 2012 तक अपने सभी ग्रामीण क्षेत्रों में संपूर्ण स्वच्छता को पहुंचाने का काम किया, लेकिन यह अभी दूर लगता है। 1981 में भारत की ग्रामीण जनसंख्या के एक प्रतिशत तक ही संपूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम का लाभ पहुंच सका था। 1991 में यह बढ़कर 11 प्रतिशत जनसंख्या तक पहुंचा। 2001 में 22 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या को इस कार्यक्रम में शामिल किया गया कि इस कार्यक्रम का लाभ 50 प्रतिशत जनसंख्या तक पहुंच गया। संपूर्ण स्वच्छता कार्यक्रम के तहत प्रत्येक घर में और हर स्कूल में शौचालय का निर्माण और अपशिष्ट पदार्थ प्रबंधन करना शामिल है। इस कार्यक्रम का पूरी तरह कार्यान्वयन अभी भी दूर की कौड़ी लगती है।

स्वच्छता और सफाई के काम का विस्तार और इसे स्वीकारने में सांस्कृतिक बाधाएं भी आड़े आती हैं। इस संबंध में दो विशेष बातें हैं। धार्मिकता और धर्मपरायणता, स्वच्छता और सफाई से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। गांवों कस्बों और मंदिरों के आसपास अक्सर बहुत गंदगी दिखाई देती है। इन जगहों पर कूड़े के ढेर, खुले में शौच, प्रदूषण और दूषित पीने का पानी आम बात है। ग्रामीण इलाकों और छोटे शहरों में जाति से संबंधित भावनाएं अभी भी प्रबल और प्रचलित हैं। बड़े शहरों में यह कम हैं। प्रदूषण की अवधारणा की सामाजिक स्वीकृति अभी जारी है जिसमें स्वच्छता और सफाई की उपेक्षा होती रही है।

सतपुड़ा के पठार पर स्थित छिंदवाड़ा मध्यप्रदेश का एक प्रमुख शहर है। छिंदवाड़ा का क्षेत्र बहुत ही उपजाऊ है और इसके आस–पास कोयला, मैंगनीज, जस्ता, बॉक्साइट और संगमरमर आदि बड़ी मात्रा में पाये जाते हैं। कपास और कोयले के लिए यह प्रदेश खासा प्रसिद्ध है साथ ही यह प्रदेश मिट्टी, जस्ता, पीतल आदि के बर्तन के लिए भी विख्यात है। छिंदवाड़ा अपने प्रकृति सौंदर्य के लिए भी जाना जाता है। इस जिले का निर्माण 1 नवंबर 1956 हुआ। छिंदवाड़ा नाम पड़ने के पीछे कई कहानियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि इस क्षेत्र में खजूर

(छिंद) के बहुत से पेड़ होने के कारण इस क्षेत्र का नाम छिंदवाड़ा पड़ा। इसी तर्ज पर एक और कहानी प्रचलित है जैसे यहाँ पर शेरों (सिंहों) की संख्या अधिक होने के कारण इसको सिंह–वाड़ा कहकर बुलाया जाता था और कालांतर में इसका नाम छिंदवाड़ा पड़ा।

प्रभावः

मध्यप्रदेश के स्वच्छता अभियान में छिंदवाड़ा क्षेत्र का खासा योगदान रहा है। इस क्षेत्र ने प्रधानमंत्री के स्वच्छता अभियान को गंभीरता से लिया और अपने क्षेत्रों की साफ–सफाई में अन्य क्षेत्रों की तुलना मे जोर–शोर से जुट गया। स्वच्छता अभियान में मध्यप्रदेश का छिंदवाड़ा क्षेत्र अग्रणी रहा है। छिंदवाड़ा क्षेत्र ने एक मिसाल कायम करते हुए अपने क्षेत्र को पूरी तरह से खुले में शौच से मुक्त करा दिया। यहाँ के बच्चों ने एक ग्रुप के माध्यम से खुले में शौच करने के खिलाफ अभियान छेड़ रखा है। जब भी कोई व्यक्ति खुले में शौच करने के लिए जाता तो यह ग्रुप सीटी बजता जिससे लोग शर्म की वजह से खुले में शौच करने से कतराने लगे। आज आलम यह है की पूरा क्षेत्र खुले में शौच से मुक्त है जो स्वच्छता अभियान के लिए एक मील का पत्थर है। छिंदवाड़ा मध्य–प्रदेश के स्वच्छता अभियान की रेटिंग में प्रथम स्थान पर है। जिससे इस क्षेत्र की सक्रियता का अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है। यहाँ के स्वच्छता अभियान की सफलता में यहाँ के बाशिंदों का अभूतपूर्व योगदान है। आज लोग रेलगाड़ियों में सफर करते हुए कचरे को यूं ही नहीं गिराते, अब कारण कोई भी हो सकता है, स्वच्छ भारत अभियान या किसी ने ये करते हुए देख लिया तो हो सकता है कि वो उनकी साख पर ही सवाल न उठा बैठे। तमाम तरह की हिचकिचाहटों के बावजूद भी लोगों ने इसे थोड़ा ही सही पर अपनाया है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोग अब शौचालय बनवाने पर जोर दे रहे हैं। नालियां जो पहले खुली हुई बजबजाती रहती थी उस पर भी ग्राम प्रधानों की दृष्टि पड़ ही गई है जिससे अभी वो इसी अभियान के तहत साफ हो रही है, कब तक होंगी ये देखने वाली बात होगी। गांवों में जो शौचालय सोख्ते वाले थे उन्हें बदल कर बहने वाले बनाए जा रहे हैं। आजादी के इतने साल बाद भी लोग स्वच्छता को केवल घर में झाड़ू–पोछा लगा लेना ही समझते रहे थे पर इस अभियान ने उन्हें घर से बाहर निकालकर गली की सफाई तक पहुंचा दिया है। अगर देश की प्रत्येक गली साफ हो जाए तो इस अभियान को सफल माना जा सकता है पर शायद अभी भी लोग इसे 'अभी दिल्ली दूर है' की दृष्टि से ही देख रहे हैं।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकड़ों का प्रस्तुतिकरणः

प्रस्तुत शोध पर्यावरण संरक्षणः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओरः छिंदवाड़ा के विशेष संदर्भ में) में अध्ययन से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि छिंदवाड़ा में स्वच्छता अभियान की स्थिति क्या है? इसकी लोकप्रियता और कार्य पद्धति को छिंदवाड़ा के निवासियों द्वारा किस रूप में लिया जा रहा है। अध्ययन छिंदवाड़ा में रहने वाले शहरी क्षेत्र के प्रतिभागियों पर केंद्रित है। प्रस्तुत अध्ययन में तथ्य और आकड़ों के संकलन हेतु निदर्शन पद्धत के माध्यम से छिंदवाड़ा जिले के 200 निवासियों को प्रश्नावली भरवाने के लिए सैंपल के रुप में लिया गया है। जिसके अंतर्गत 18 वर्ष से अधिक आयु के महिला और पुरुष प्रतिभागियों से प्रश्नावली/अनुसूची के द्वारा अध्ययन को मूर्त रुप दिया गया है। प्रश्नावली में कुल 12 प्रश्नों को रखा गया है। जिनमें 11 बहुविकल्पीय प्रश्न और 12वां प्रश्न खुला रखा गया है। प्रश्न के द्वारा प्रतिभागियों से विषय से संबंधित विचार एवं सुझाव लिए गए हैं। तथ्य संकलन माह– अप्रैल और मई 2016 में किया गया है। प्रश्नावली के कुल प्रश्नों में से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों का चित्रमय प्रस्तुतीकरण किया गया है। जो इस प्रकार है–

1. क्या स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने का प्रयास है?

प्रश्न के संदर्भ में 90 प्रतिशत मत हां के पक्ष में प्राप्त होते हैं जो यह साबित करते हैं कि स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने का प्रयास है। स्वच्छ भारत अभियान को अधिकतर प्रतिभागी गांधीजी के स्वच्छता अभियान से जोड़कर देखते हैं। नहीं और पता नहीं के अंतर्गत केवल 5, 5 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं।

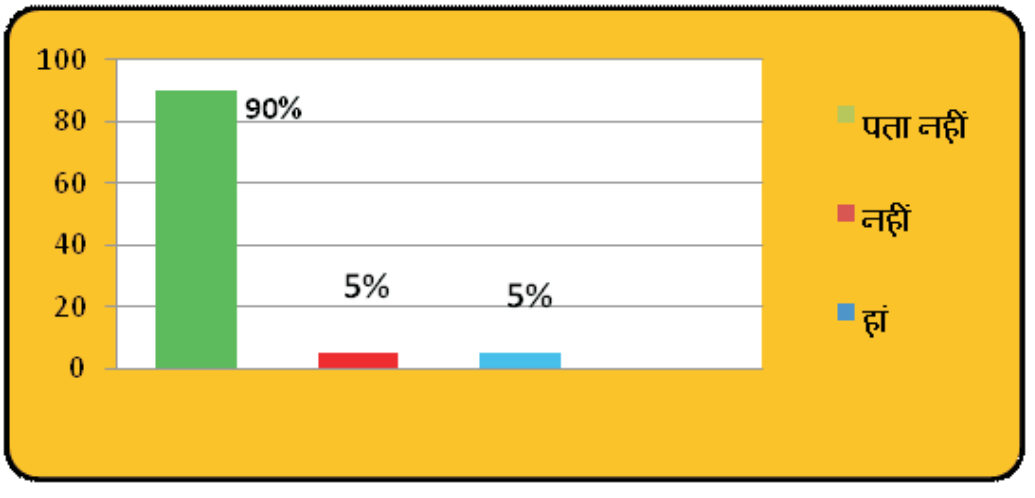

2. स्वच्छ भारत अभियान में गांधी को जोड़ने के पीछे सरकार का क्या उद्देश्य है?

प्रश्न के संदर्भ में सबसे अधिक 50 प्रतिशत मत प्रतिभागियों ने स्वच्छता के प्रति जागरुकता लाना के पक्ष में दिया है वहीं इस अभियान को 27 प्रतिशत प्रतिभागी विश्व पटल पर भारत की स्वच्छ छवि का निर्माण, 16 प्रतिशत लोग इसे गांधी के विचारों से जोड़ते हैं और

7 प्रतिशत प्रतिभागी इस अभियान को राजनीतिक लाभ की दृष्टि से देखते हैं। प्रस्तुत मत यह दर्शाते हैं कि सरकार के द्वारा स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य स्वच्छता के प्रति आमजन को जागरुक करना है।

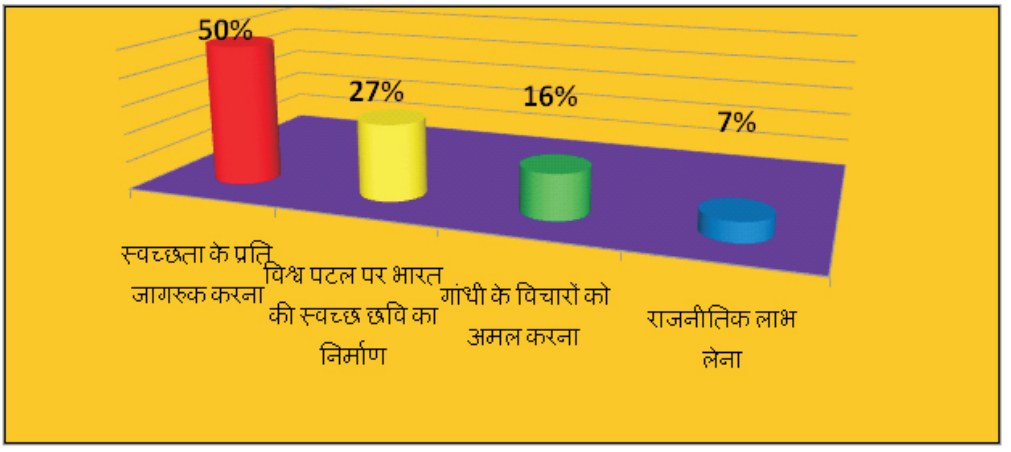

3. क्या आपको लगता है कि स्वच्छ भारत अभियान लोगों में जागरुकता लाने में सफल हो रहा है?

उक्त प्रश्न के संदर्भ में 84 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान लोगों में जागरुकता लाने का कार्य कर रहा है वहीं 13.5 प्रतिशत प्रतिभागी इस अभियान को असफल मानते हैं। तथ्यों के अनुसार गौर करें तो स्वच्छ भारत अभियान समाज में लोगों को जागरुक करने में सफल हो रहा है। पता नहीं के अंतर्गत केवल 2.5 प्रतिशत मत प्राप्त होते है।

4. क्या आप स्वच्छ भारत अभियान से जुड़े हैं?

प्रश्न के मत चौकाने वाले प्राप्त होते हैं। अध्ययन में शामिल 91.5 प्रतिशत प्रतिभागी स्वच्छ भारत अभियान से जुड़े हैं। अध्ययन से प्राप्त आंकड़े इस अभियान की लोकप्रियता को दर्शाते हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा देश एवं आस–पास के वातावरण को स्वच्छ करने के उद्देश्य से आरम्भ की गई योजना को आमजन द्वारा कितना स्वीकार किया जा रहा है। यह उनकी सरकार का सफल एवं सराहनीय प्रयास है।

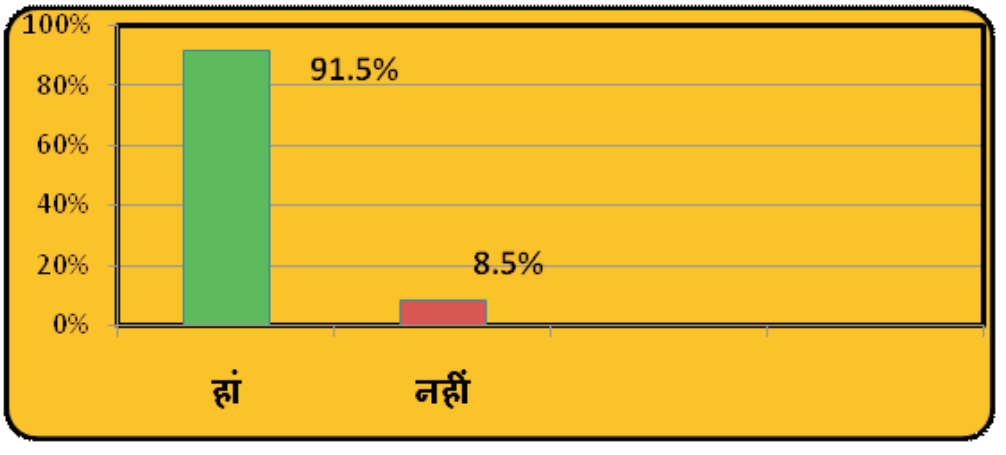

5. स्वच्छ भारत अभियान से आप किस प्रकार जुड़े हैं?

87.5 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान में आसपास के वातावरण को स्वच्छ करने एवं रखने के उद्देश्य से जुड़े हैं। आंकडे इस अभियान की सफलता को बखूबी दर्शाते हैं। 5 प्रतिशत प्रतिभागी इस अभियान से प्रचार–प्रसार के लिए, 2 प्रतिशत राजनीतिक कारणों से, छवि निर्माण के लिए 4 प्रतिशत और किसी के दबाव में आकर 1.5 प्रतिशत प्रतिभागी इस अभियान से जुड़े हैं।

स्वच्छ भारत अभियान में प्राप्त आंकड़े दर्शाते हैं कि यह अभियान अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल हो रहा है।

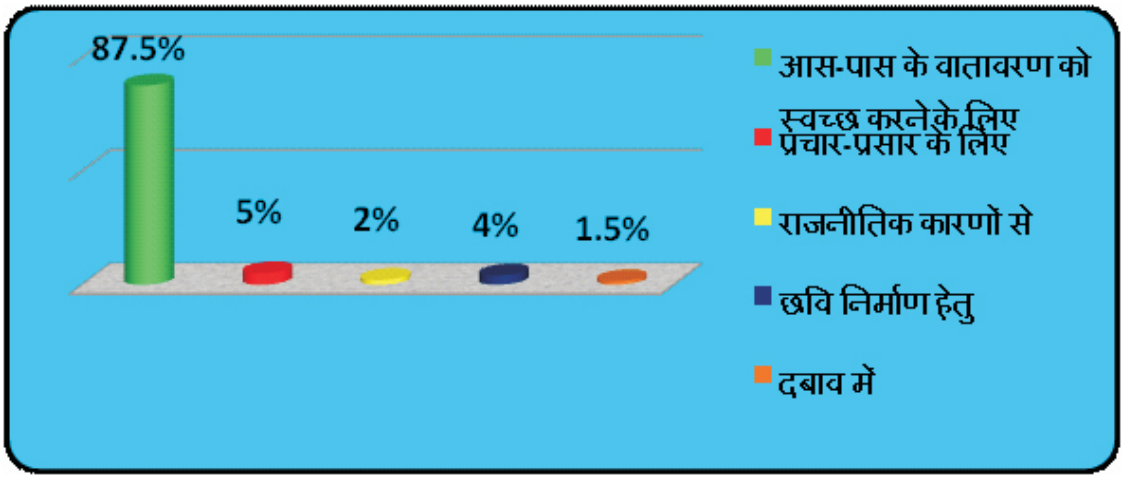

6. क्या स्वच्छ भारत अभियान के बाद से लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर बढ़ा है?

प्रश्न के संदर्भ में प्राप्त 74.5 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर बढ़ा है वहीं 18.5 प्रतिशत लोगों ने नहीं के पक्ष में मत दिया है। 7 प्रतिशत लोगों ने पता नहीं विकल्प को अपना मत दिया है। प्राप्त तथ्यों के आधार पर कह सकते हैं कि स्वच्छता अभियान के बाद से आमजनों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर बढ़ा है।

7. क्या आप स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर करते हैं?

उक्त प्रश्न के संदर्भ में 48.5 प्रतिशत लोगों का मानना है कि वे स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर ही करते हैं वहीं 49.5 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि वे कभी भी स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर नहीं करते हैं। प्रस्तुत आंकड़े दर्शाते हैं कि लोग जहां स्थान विशेष के आधार पर स्वच्छता के नियमों का पालन करते हैं तो वहीं कुछ लोग स्थान विशेष के आधार पर स्वच्छता के नियमों का पालन नहीं करते हैं। केवल 2 प्रतिशत प्रतिभागियों ने पता नहीं के विकल्प को चुना है।

8. क्या स्वच्छ भारत अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है?

प्रश्न के संदर्भ में 79 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छता अभियान के बाद से गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है वहीं 21 प्रतिशत उत्तदाताओं का मानना है कि स्वच्छता अभियान के बाद से गंदगी से हाने वाली बीमारियों में कमी नहीं देखने को मिली है। प्रस्तुत तथ्य यह दर्शाते हैं कि स्वच्छता अभियान के बाद गंदगी से होने वाली बीमारियों में काफी कमी आई है।

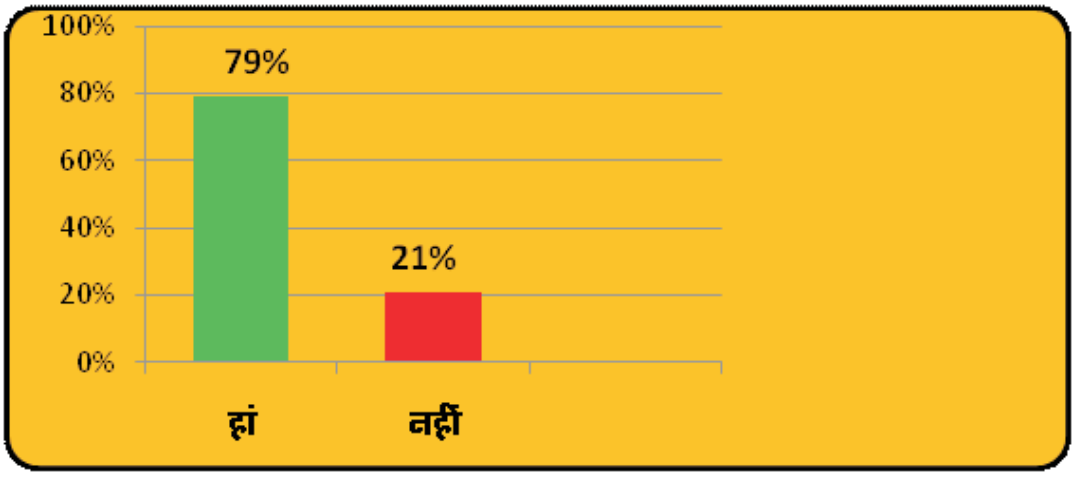

9. स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ रहा है? उक्त प्रश्न के संदर्भ में प्राप्त 86.5 प्रतिशत मतदाताओं का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता के लिए लोगों में सामाजिक सहयोग बढ़ा है वहीं 13.5 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि इस अभियान से सामाजिक सहयोग नहीं बढ़ा है। हां से प्राप्त 86.5 प्रतिशत तथ्य यह दर्शाते हैं कि यह अभियान सामाजिक सहयोग बढ़ाने में सफल है।

10. आप स्वच्छता अभियान में एक महीनें में कितना समय देते हैं? प्रश्न के संदर्भ में 60.5 प्रतिशत प्रतिभागी 1 महीने में स्वच्छता अभियान में 1 से 3 घंटा समय देते हैं। 19 प्रतिशत लोग 1 महीने में 3 से 6 घंटा, 1.5 प्रतिशत प्रतिभागी 6 से 9 घंटा, 19 प्रतिशत प्रतिभागी 9 घंटे से अधिक समय स्वच्छता अभियान में देते हैं। आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ज्यादातर लोग स्वच्छता अभियान को 1 से 3 घंटे का

समय दे रहे हैं।

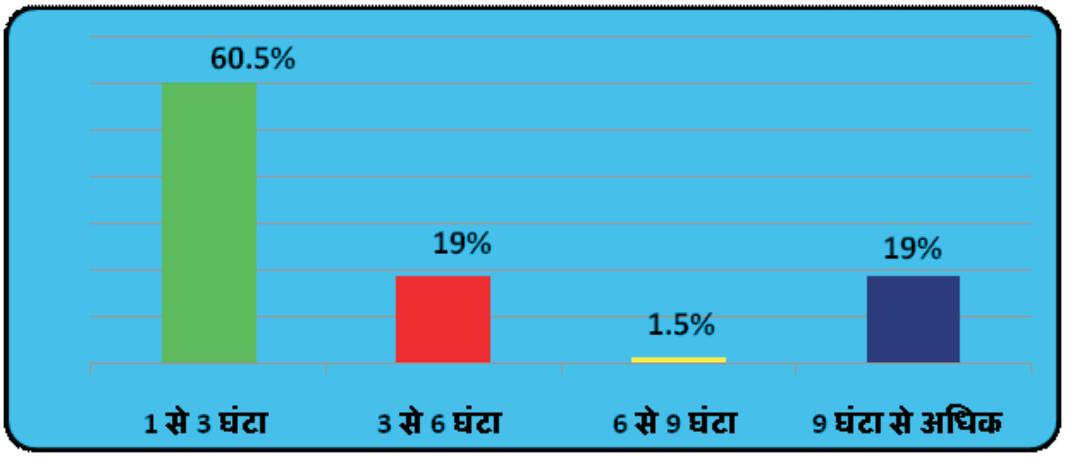

11.स्वच्छ भारत अभियान में जानी–मानी हस्तियों (अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर, मुकेश अंबानी इत्यादि) के जुड़ने से अभियान में लोगों का जुड़ाव बढ़ा है?

प्रश्न के संदर्भ में 82 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान में जानी–मानी हस्तियों (अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर, मुकेश अंबानी इत्यादि) के जुड़ने से स्वच्छता अभियान में आमजन का जुड़ाव बढ़ा है वहीं 18 प्रतिशत प्रतिभागी इसके पक्ष में नहीं है। आंकड़े स्वच्छ भारत अभियान की सफलता को दर्शाते हैं।

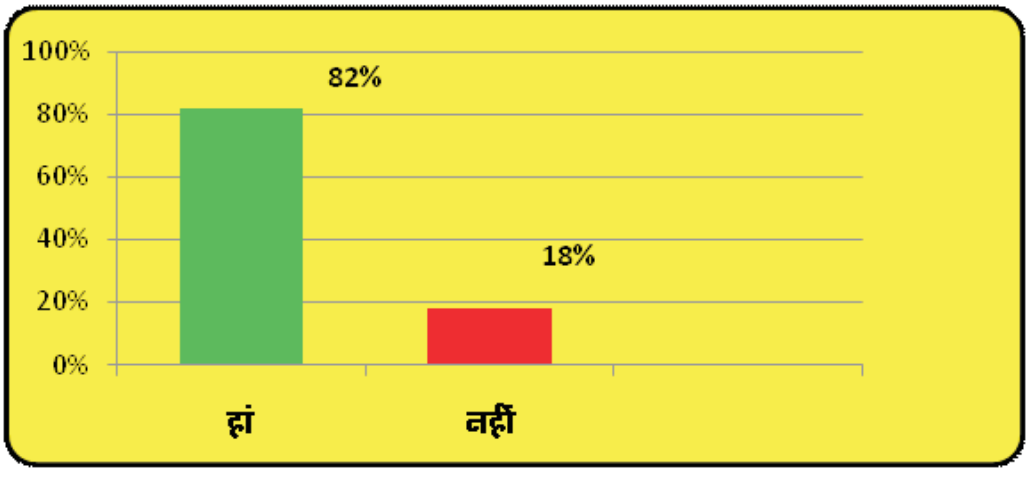

12. स्वच्छ भारत अभियान पर अपने विचार एवं सुझाव दें?

प्रस्तुत प्रश्न के संबंध में अनेक प्रतिभागियों ने अपने विचार एवं सुझाव दिए हैं जिनमें से कुछ विचारों को अध्ययन में शामिल किया जा रहा है। जो इस प्रकार हैं–

प्रश्न क्र.12 सकारात्मक विचारः

• स्वच्छ भारत आभियान का उद्देश्य है कि लोग अपने आस–पास के वातावरण को साफ रखें और बीमारियों से बचे। इस अभियान से हमारा देश स्वच्छ देशों की गिनती में जल्द ही ऊपरी पायदान पर होगा। यह अभियान हमारे हित के लिये बहुत ही लाभदायक है।

• स्वच्छ भारत अभियान देश का सबसे बड़ा अभियान माना जाता है जब से स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत हुई। चारों तरफ साफ–सफाई हो रही है।

• अभियान चलाने की जरूरत का आशय यह भी है कि हमारी नगरपालिका परिषद, ग्राम पंचायतें व संबंधित विभाग अपने दायित्वों का निर्वहन करने में असफल रहे तो वहां भी सुधार अपेक्षित है।

• स्वच्छता अभियान से हर नागरिक में नैतिक जबाब देही बढ़ी है। इस अभियान से समाज के सभी लोगों में एकजुटता बढ़ी है। इस अभियान से ग्रामीण क्षेत्रों में जागरुकता देखने को मिलती है।

प्रश्न क्र.12 नकारात्मक विचारः

• स्वच्छ भारत अभियान में राजनेता, बुद्धिजीवी, समाजसेवी, कलाकार एवं वरिष्ठ नागरिक केवल फोटो खिचा कर मीडिया में छाए रहते हैं। एक दिन झाड़ू ले लेने से स्वच्छता नहीं हो जाती है । दिखावे से दूर हटकर धरातल पर स्वच्छ भारत अभियान को लाना होगा जोकि कोसों दूर नजर आता है।

• भारत गांवों का देश है लेकिन इस अभियान की शुरुआत शहर से हुई जो प्रथम स्तर पर ही फेल हो गया है। यह अभियान साफ–सफाई कम फोटोबाजी ज्यादा नजर आता है।

प्रश्न क्र.12 सुझावः

• मेरा व्यक्तिगत सुझाव है कि लोगों को अपने आस–पास के वातावरण को साफ रखना चाहिए। कचरा–कूड़ा एक विशेष स्थान पर ही फेकना चाहिए। तभी हम बीमारियों से बच पायेंगे। यदि हम बीमारियो से बचेंगे तो हमारा भारत अपने–आप स्वच्छ हो जाएगा।

• स्वच्छ भारत अभियान से व्यक्तियों को कोई लेना देना नहीं रखना चाहिए । व्यक्तियों को अपने घर के आस–पास स्वयं साफ–सफाई रखनी चाहिए । सरकार को घर–घर में एक कूड़ादान देना चाहिए जिससे कोई भी व्यक्ति नाली में कचरा नहीं फेकेगा ।

• नागरिकों में स्वच्छता के प्रति स्वप्रेरणा का स्तर इतना होना चाहिए कि सरकार को इसके लिए अभियान चलाने की आवश्यकता न रहे । ऐसा स्कूल शिक्षा के पाठ्यक्रम में समाविष्ट किया जाना चाहिए । सरकारी अभियान से अधिक कारगर उपाय यह होगा कि हम इसे पाठ्यक्रम का अंग बना दें। और इसकी मॉनिटरिंग की व्यवस्था दुरुस्त करें।

निष्कर्षः

प्राप्त तथ्यों के अनुसार निम्नलिखित निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

- 90 प्रतिशत मतदाताओं का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान गांधी के सपनों को साकार करने का प्रयास है। स्वच्छ भारत अभियान को अधिकतर प्रतिभागी गांधीजी के स्वच्छता अभियान से जोड़कर देखते हैं।
- 50 प्रतिशत लोग स्वच्छता अभियान में गांधीजी को जोड़ने के पीछे आमजन में जागरुकता लाने के उद्देश्य से देखते हैं। कुछ मतदाता इसे विश्व पटल पर छवि निर्माण और राजनीतिक लाभ की दृष्टि से देखते हैं।
- 84 प्रतिशत आंकड़े यह दर्शाते हैं कि स्वच्छता अभियान लोगों में जागरुकता लाने में सफल रहा है। आंकड़े यह साबित करते हैं कि स्वच्छता अभियान से आमजन में स्वच्छता को लेकर जागरुकता बढ़ी है।
- छिंदवाड़ा जिले के 91.5 प्रतिशत मतदाता स्वच्छता अभियान से जुड़े हैं। आंकडों पर गौर करें तो स्वच्छता अभियान जिले में पूरी तरह से सफल दिखता है।
- स्वच्छता अभियान में 87.5 प्रतिशत मतदाता अपने आस–पास के वातावरण को स्वच्छ रखने के उद्देश्य से जुड़े हुए हैं। वहीं कुछ प्रतिभागी स्वच्छता अभियान से प्रचार–प्रसार, छवि निर्माण और राजनीतिक लाभ के लिए जुड़े हैं।
- 74.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कहा कि स्वच्छता अभियान के बाद से गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर बढ़ा है वहीं 48.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना की वे स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष के आधार पर करते हैं। जिसे बढ़ाने की आवश्यकता है।
- स्वच्छ भारत अभियान के बाद गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है। जिससे लोगों के रहन–सहन का स्तर बढ़ रहा है। 86.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान के बाद से स्वच्छता हेतु सामाजिक सहयोग बढ़ा है।
- ज्यादातर प्रतिभागी एक महीने में स्वच्छता अभियान को 1 से 3 घंटे का समय देते हैं। 82 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि स्वच्छता अभियान में जानी–मानी हस्तियों (अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर, मुकेश अंबानी इत्यादि) के नाम जुड़ने से अभियान में आम लोगों का जुड़ाव बढ़ा है।

सुझावः

शोध अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा रहे हैं–

• स्वच्छता अभियान की जिम्मेदारी स्थानीय स्तर पर तय करनी होगी।

• स्वच्छता अभियान के साथ–साथ लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता लाएं।

• स्वच्छता अभियान से संबंधित नियमावली बनवाकर आम जन को जागरुक करें।

• स्वच्छता अभियान में लोगों का जुड़ाव राजनीतिक स्तर से उपर उठकर होना चाहिए।

• स्वच्छता अभियान से जुड़े समाचारों को मीडिया को ज्यादा कवरेज देनी चाहिए जिससे आमजन तक स्वच्छता और जागरुकता की बात पहुंच सके।

शोध की उपयोगिता एवं भविष्य में शोधः

प्रस्तुत शोध 'पर्यावरण संरक्षणः स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण (एक कदम स्वच्छता की ओरः छिंदवाड़ा के विशेष संदर्भ में)' में विषय के माध्यम से वर्तमान समय में स्वच्छता अभियान की स्थिति, प्रभाव, पहुंच और उसकी लोकप्रियता पर केंद्रित किया गया है। शोध के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि छिंदवाड़ा जिले में स्वच्छता अभियान को लेकर लोग कितने जागरूक हैं। स्वच्छता अभियान में लोगों की भागीदारी कितनी है? स्वच्छता अभियान सिर्फ प्रचार–प्रसार करने का केंद्र बन गया है या सही मायने में स्वच्छता के

लिए कार्य किया जा रहा है इन सभी प्रश्नों को जानने और समझने के लिए शोध को आधार बनाया गया है। शोध में प्राप्त आंकड़े शोध की उपयोगिता को दर्शाते हैं।

सहायक संदर्भ सूचीः

• Dash Dhanalaxmi, Satapathy Mahendra K., People Who Make a Change (Men and Women in Environmental Movements.

• Das Arpana Dhar, Modern Environmental Ethics : A Critical Survey.

• R Rajeevan, Towards A Humane Environment Responsibilities of State, Role of Civil Society & Rights of Citizens, Gyan Books Pvt. Ltd. (Delhi, India).

• B. Verma, Environmntal Pollution: An Introduction, Kunal Books Publishers

• Vishwakarma, Dharam Das, Adoption of Agricultural Development Measures in Chhindwara, New Delhi: Northern Book Centre, 2003, 81-7211-148-7.

• Krishnan, V. S., Madhya Pradesh, District Gazetteers: Chhindwara, Government Central Press, 1995.

• सिंह, डॉ अशोक कुमार, उत्तर प्रदेश के प्राचीनतम नगर, द्वितीय संस्करण, वाणी प्रकाशन, पैठछ 81–8143–277–0, 2005.

• गुप्ता, बंदना, नगर निगम की प्रबंधकीय व्यवस्था, वाराणसी, एक अध्ययन, पिल्ग्रिम्स पब्लिशिंग, पैठछ 8177697730, 2009.

• गौतम, राकेश और जितेंद्र सिंह भदौरिया, मध्यप्रदेश एक परिचय, नई दिल्लीः टाटा मैकग्रा हिल प्राइवेट लि., 2011, 978–0–07–1329446.

रिपोर्टः

•Joint Statement issued at the conclusion of the, 22nd BASIC Ministerial Meeting on Climate Change, New Delhi, India, 7 April 2016

• Climate change 2014: impacts, adaptation, and vulnerability-WHO

• Annual Report 2014-15, Government of India, Ministry of Environment, Forests and Climate Change.

बेवसाइट संदर्भः

1.http://www.chhindwara.nic.in/

2.http://www.zpchhindwara.nic.in/

3.http://www.chhindwara.net/

4.http://pmindia.gov.in/en/government_tr_rec/swachh-bharat-abhiyan-2/

5.http://www.epa.ie/&panel1-1

6.https://en.wikipedia.org/wiki/Swachh_Bharat_Abhiyan

7.http://cipet.gov.in/swachh.html#ad-image-22

8.http://nmcnagpur.gov.in/

9.http://swachhbharaturban.gov.in/Whats_New.aspx

10.https://gramener.com/swachhbharat/#?city=Varanasi

11.http://india.gov.in/spotlight/swachh-bharat-abhiyaan-ek-kadam-swachhata-ki-ore

12.http://www.who.int/topics/environmental_pollution/en/

13.http://www.indiaenvironmentportal.org.in/category/10430/thesaurus/nasa/

14.http://www.environmentmagazine.org

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org